रायपुर के विश्वविद्यालयो में पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर के उपयोग का मूल्यांकन

राजकुमारी वर्मा
शोधार्थी
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आईएसबीएम विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़
डॉ. बी. के. पाढ़ी
सहायक प्राध्यापक एवं शोध-निर्देशक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आईएसबीएम विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़

सार

"रायपुर के विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर के उपयोग का मूल्यांकन" विषय पर यह अध्ययन पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिकीकरण में स्वचालन सॉफ्टवेयर की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वर्तमान डिजिटल युग में पुस्तकालयों में सूचना प्रबंधन, संसाधनों की उपलब्धता तथा उपयोगकर्ता सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्वचालन सॉफ्टवेयर का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य रायपुर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रयुक्त पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर की उपयोगिता, प्रभावशीलता तथा उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालय पुस्तकालयों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सॉफ्टवेयर की कार्यप्रणाली, उपयोग में आने वाली समस्याओं, तथा सेवाओं की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया कि पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर ने पुस्तकालय संचालन को अधिक सुव्यवस्थित, त्वरित और उपयोगकर्ता–अनुकूल बनाया है। हालांकि, कुछ स्थानों पर तकनीकी समस्याएं, प्रशिक्षण की कमी तथा संसाधनों की सीमाएं इसके प्रभावी उपयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं। अंततः, यह अध्ययन सुझाव देता है कि उचित प्रशिक्षण, तकनीकी सुधार और संसाधनों की उपलब्धता के माध्यम से पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर के उपयोग को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है,जिससे विश्वविद्यालयों की शैक्षणिक और शोध गतिविधियों को सशक्त समर्थन मिल सके।

मुख्य शब्द *विश्वविद्यालयो पुस्तकालए सॉफ्टवेयर*

परिचय

व्यक्ति को अपने विभिन्न उपयोगों के लिए शुरुआत से ही जानकारी की आवश्यकता होती है। इसलिए सूचना की मांग दिन–प्रतिदिन तेजी से बढ़ रही है। इसके महत्व के कारण, यह प्रत्येक मानव गतिविधि में लगा हुआ है, इसलिए इसके अभाव में, जिस समाज में मानव रहते हैं उसे

विकसित होने और मजबूत होने में कठिनाइयाँ महसूस होती हैं। सूचना जीवन स्तर में वृद्धि और सुधार का एक अनिवार्य घटक है। आधुनिक समाज में, सूचना का विकास और विकास के साथ निकट संबंध है, जो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, व्यावसायिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। विकास के लिए सूचना और ज्ञान के अनुप्रयोग के कारण समाज में एक समुद्री परिवर्तन हो रहा है। अपने सभी शानदार प्रगति के साथ सूचना प्रौद्योगिकी इन क्रांतिकारी परिवर्तनों के प्रमुख समाज का मुख्य साधन रही है, जिसे श्सूचना युगश के रूप में जाना जाता है। पुस्तकालयों और सूचना केंद्रों को अपनी गतिविधियों के साथ इस तरह से ट्यून करना चाहिए ताकि नई चुनौतियों का सामना किया जा सके और समाज में तेजी से और व्यापक बदलाव हो सकें। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के कारण संचार माध्यमों की संख्या विकसित हुई है, जो आधुनिक बौद्धिक समाज के लिए बहुत सहायक हैं। उनमें से कुछ लोकप्रिय रूप से उपयोग किए जाते हैं, जो मौखिक, मौखिक और ऑडियो विजुअल संचार, टेलीविजन, रेडियो, दूरसंचार और उपग्रह संचार के रूप में हैं। कंप्यूटर का उपयोग ज्यादातर संचार के लिए किया जाता है।

कंप्यूटर एक मशीन है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में किया जा रहा है। सरकारी विभाग, एजेंसियां, संस्थाएं और अन्य समान संगठन अपनी गतिविधियों के विभिन्न प्रकार जैसे डेटा प्रोसेसिंग प्रबंधन सूचना प्रणाली में इसका उपयोग कर रहे हैं। पुस्तकालय में कंप्यूटर का उपयोग उनकी परिचालन क्षमता में सुधार के लिए भी किया जा रहा है।कंप्यूटर सिस्टम का मुख्य भाग हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के संदर्भ में है। हम जानते हैं कि हार्डवेयर कंप्यूटर के भौतिक घटकों का संग्रह है, जबकि सॉफ्टवेयर वह साधन है जिसके द्वारा कंप्यूटर सिस्टम के हार्डवेयर का सामान्य उद्देश्य विशिष्ट कार्यों को करने के लिए बनाया जाता है। सॉफ्टवेयर को कंप्यूटर के लिए (वसंत और मुधोल 2000, पी .44) कार्यक्रमों के एक सेट के रूप में भी परिभाषित किया गया है। स्वचालन के लिए पुस्तकालयों का उपयोग कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर के लिए किया जाता है (स्वचालन प्रक्रिया और प्रणालियों के डिजाइन और विकास से संबंधित तकनीक है जो उनके संचालन और सेवाओं की दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए उनके संचालन में मानव हस्तक्षेप की आवश्यकता को कम करते हैं)। पूरी दुनिया में, यहाँ तक कि भारत में भी कई वाणिज्यिक फर्मों ने पुस्तकालय सॉफ्टवेयर विकसित किया है, लेकिन वे महंगे हैं। आगे के शोध भारत में विकसित पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पैकेजों का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं।

अनुसंधान के उद्देश्य

1ण रायपुर (ब्ण्ळ.) के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर और सेवाओं के प्रकारों की पहचान करना।
2ण रायपुर (ब्ण्ळ) में विश्वविद्यालयों की पुस्तकालय सेवाओं में स्वचालन और तकनीकी विकास की सीमा की जांच करना।)
3ण विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में पुस्तकालय प्रबंधन के लिए उपयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा

नायर, आर0 रमन (1995) अकादमिक लाइब्रेरी ऑटोमेशन वर्तमान विकास और विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और अन्य शोध संस्थानों के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में अनुभव प्रस्तुत करता है। उच्च शिक्षा में शिक्षण और सीखने की गुणवत्ता, और अनुसंधान कार्य के दोहराव के माध्यम से संसाधनों की बर्बादी से बचने और प्रासंगिक अद्यतन जानकारी के लिए समय पर पहुंच। लेकिन सूचना विस्फोट, सूचनाओं का बिखराव, इसके उपयोग के पैटर्न में जटिलताएं और सीमित संसाधनों के कारण यह मुश्किल हो गया है। इस प्रकार स्वचालन शैक्षणिक पुस्तकालयों में लंबे समय से चली आ रही समस्याओं का सार्थक समाधान निकालने के प्रयासों का एक स्वाभाविक परिणाम था। नई प्रौद्योगिकियों ने ऑनलाइन डेटाबेस, सीडी–रॉम, वीडियो डिस्क और अन्य विदेशी मीडिया की शुरुआत करके पारंपरिक शैक्षणिक पुस्तकालय की दीवारों को खटखटाया है। अब, डेटाबेस राष्ट्रीय सीमाओं के दायरे से परे उपयोगकर्ता के लिए सुलभ हैं। व्यापक नेटवर्क संभव व्यापक भौगोलिक साहस बनाते हैं। ब्क–त्व्ड तकनीक कॉम्पैक्ट, टिकाऊ और अत्यधिक पोर्टेबल माध्यम पर बड़ी मात्रा में जानकारी के भंडारण की अनुमति देती है। यह लाइन लाइब्रेरी सिस्टम में कला का राज्य होने के नाते, उच्च शिक्षा के संस्थानों को अपने पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण करना है यदि वे अकादमिक समुदाय की सूचना आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए हैं।

सहगल, आर.एल. (1998) ने उल्लेख किया है, कई संगठनों ने आमतौर पर पुस्तकालय और सूचना कार्यों के लिए सामान्य तरीके से लिखे गए कार्यक्रमों के पैकेज तैयार किए हैं या कर रहे हैं। किसी विशेष एप्लिकेशन के लिए उपयुक्त ऐसे कई पैकेजों का विवरण विस्तार से वर्णित है। यह पुस्तक एक कदम आगे निकलती है और आवेदन और आवश्यकता को देखते हुए उन बिंदुओं को सामने लाती है जो उपयोगकर्ता को पुस्तकालय की आवश्यकता के लिए सबसे उपयुक्त सॉफ्टवेयर को बंद करने में मदद करेंगे। इस पुस्तक में, कुछ संकुल जो कि इंटरएक्टेड लाइब्रेरी सिस्टम के रूप में विकसित किए गए हैं, विस्तार से वर्णित हैं। उनमें से कुछ को एक पुस्तकालय या पुस्तकालयों के समूह के लिए दर्जी बनाया गया है लेकिन किसी भी पुस्तकालय द्वारा उपयोग किए जाने के लिए बहुत उपयुक्त हैं।

वसंत, एन और मुधोल, एम.वी. (2000) लाइब्रेरी ऑटोमेशन के सॉफ्टवेयर पैकेजों को परिचय, कंप्यूटर कॉन्फिगरेशन, सॉफ्टवेयर पैकेज के विकास, विशिष्ट सॉफ्टवेयर पैकेज, अन्य महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर पैकेज और उपसंहार जैसे छह अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक और प्रत्येक अध्याय पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पैकेज और संबंधित शर्तों के बारे में परिभाषित किया गया है।

बिलाल, दनिया (2002) यह अद्यतन और विस्तारित दूसरा संस्करण 21 वीं सदी में पुस्तकालय स्वचालन के लिए नवीनतम निष्कर्ष और अभ्यास प्रदान करता है। एक व्यावहारिक, व्यवस्थित दृष्टिकोण के साथ, बिलाल स्वचालन प्रक्रिया में शामिल चरणों और गतिविधियों के पूरे स्पेक्ट्रम को कवर करता है। यद्यपि यह पाठ एक विशिष्ट प्रणाली या दृष्टिकोण को निर्धारित नहीं करता है, यह शिक्षित निर्णय लेने के लिए नौसिखिया और अनुभवी लाइब्रेरियन दोनों को सक्षम करने

के लिए विस्तृत दिशा–निर्देश प्रदान करता है और पहली बार स्वचालन करते समय खो जाने वाली गलतियों से बचने के लिए, मौजूदा सिस्टम को अपग्रेड करना, या एक स्वचालित से माइग्रेट करना दूसरे को सिस्टम।

कश्यप, एम.एम. (2006) ने कहा है कि, कंप्यूटर आधारित पुस्तकालय और सूचना प्रणाली डिजाइन करने की तकनीक सिस्टम विश्लेषण और डिजाइन की प्रक्रिया को समझने के साथ–साथ पुस्तकालयों में बेहतर सूचना प्रौद्योगिकी आधारित प्रणालियों को डिजाइन करने में मदद करने के लिए सिस्टम सिद्धांत का लेखा देना हैय सिस्टम के अध्ययन के संचालन के लिए कार्यप्रणाली का वर्णन करना और सिस्टम विश्लेषण और डिजाइन टूल और तकनीकों के उपयोग और अनुप्रयोग की व्याख्या करना। यह पुस्तक लिखी गई है, अभ्यास करने वाले पुस्तकालयाध्यक्षों को ध्यान में रखते हुए, जिन्हें समस्या क्षेत्रों की पहचान करने के लिए पुस्तकालय कार्यक्रमों और प्रक्रियाओं के मूल्यांकन की जिम्मेदारी का सामना करना पड़ता है, अर्थात, ऐसी परिस्थितियाँ जो कि अपेक्षित होने के बीच अंतराल या विचलन हैं, क्या कर सकते हैं और क्या लिखना चाहिए हो सकता है और अंतराल को पाटने का साधन ढूंढा जाए। दूसरा दर्शक जिसे यह पुस्तक संबोधित है, वह पुस्तकालय और सूचना विज्ञान के छात्र हैं जो पुस्तकालयों, पुस्तकालय प्रणाली विश्लेषण और डिजाइन या पुस्तकालय प्रणाली के अध्ययन और फिर से इंजीनियरिंग तकनीक और पुस्तकालय डेटाबेस डिजाइन और विकास के दृष्टिकोण में कंप्यूटर अनुप्रयोग में एक कोर्स में शामिल हो सकते हैं।

कोचर, आर.एस. और सुदर्शन, के.एन. (2007) लाइब्रेरी ऑटोमेशन, स्वचालित पुस्तकालय के लिए उपलब्ध सबसे आधिकारिक पाठ है। यह पुस्तक पुस्तकालय स्वचालन के इतिहास के लिए एक तैयार संदर्भ है और तकनीकी सहायता प्रणालियों, व्ट।ě सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणालियों, व्यावहारिक उधार देने वाली जीवनली उपयोगिताओं, संदर्भ में स्वचालन और बहुत अधिक में व्यावहारिक, आवश्यक डेटा देता है। स्वचालनरू मुद्दों और प्रणालियों कॉम्पैक्ट में प्रस्तुत करता है लाइब्रेरी ऑटोमेशन के साथ जुड़े बुनियादी मुद्दे और पहलुओं को भाषा और स्पष्ट शैली। भागीदारी के हर स्तर के पाठक के लिए, लाइब्रेरी ऑटोमेशनरू मुद्दों और प्रणालियों का विस्तार प्रौद्योगिकी और मानव अंतर–विचलन का व्यापक उपचार है। जैसा कि स्वचालन एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्रत्येक पुस्तकालय सुविधा को एक दूसरे के एक अंश तक स्पर्श करेगी। इसलिए यह पुस्तक पुस्तकालय में स्वचालन के विषय में आने वाले मुद्दों के साथ आने वाले प्रत्येक लाइब्रेरियन और प्रशासक की सहायता कर सकती है।

सिंह, सी.पी. (2008) वर्तमान पुस्तक में क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों का वैज्ञानिक अंतर–ढोंग शामिल है जिसमें शामिल हैं – परिचयय संदर्भ सेवा का स्वचालनय पुस्तकालय अधिग्रहण स्वचालनय प्रौद्योगिकी की भूमिकाय एक सिस्टम के रूप में लाइब्रेरी सेवाओं और उनके उपयोगकर्ताओं में परिवर्तनय लाइब्रेरी आर्किटेक्चर और सिस्टमय कैटलॉगिंग में स्वचालनय पुस्तकालय प्रबंधनय समस्या और संभावनाएंय कॉपीराइट सुरक्षा और प्रबंधन प्रणालीय कॉपीराइट और दूरस्थ शिक्षाय पुनर्प्राप्ति प्रक्रियाय पहुँच और योजना।

अनुसंधान पद्धति

दुनिया में प्रत्येक मानव गतिविधि के लिए जानकारी आवश्यक है। यह किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह मानव ज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान से प्राप्त सभी निष्कर्षों को शामिल करता है और भविष्य के अनुसंधान और विकास के लिए आधार बनाता है शब्द की जानकारी प्रोफेसर आरजी प्रैशर द्वारा ष्डेटा संसाधित या तथ्यों का व्यवस्थित शरीर जो हमारे लिए उपयोगी है, जो निर्णय को प्रभावित करता है और अनिश्चितता को कम करता है, जानकारी के रूप में जाना जाता है। सूचना के विस्फोट ने जटिलताओं को नियंत्रित और प्रसार किया है, हालांकि पिछले तीन दशकों में इस दिशा में कई तरह के सफल प्रयास हुए हैं। सूचना उत्पादन का कार्य कंप्यूटर द्वारा, विशेष रूप से डेटाबेस तक लाइन पहुंच, नेटवर्किंग के माध्यम से ई–मेल सेवाओं द्वारा किया गया है। पहली नजर में कंप्यूटर और लाइब्रेरीज का जक्सटैप असंगति और एंकरिंग हो सकता है। उन्हें अजीब बिस्तर फेलो भी कहा जा सकता है। यह स्पष्ट गलतफहमी या असंगतता ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में है जिस तरह से संबंधित क्षेत्रों में पेशेवर सूचना संसाधनों को संभालते हैं। पुस्तकालयों को परंपरागत रूप से विभिन्न प्रकार के मैक्रो–दस्तावेजों के स्टोर हाउस के रूप में माना जाता है। स्पष्ट रूप से उपयोगी है, लेकिन पूर्व समन्वित और चतमंततंदहमक अनुक्रम। ऐसे समाज में जहां सूचना आवश्यक है, सूचना आपूर्ति का पुस्तकालय कार्य महत्वपूर्ण होगा। भारत में अग्रणी कंप्यूटर पत्रिकाओं में से एक ने जनवरी 1990 की अपनी विशेष रिपोर्ट में निम्नानुसार लिखा हैजो दशक अभी–अभी गुजरा है, उसे उपयुक्त रूप से कंप्यूटर का दशक कहा जा सकता है। क्योंकि, पिछले 10 वर्षों के दौरान किए गए सभी तकनीकी उपलब्धियों और नवाचारों में, यह केवल पिछले दशक के दौरान था कि वे उम्र के आए हमारे जीवन के हर पहलू को एक चिकित्सा स्पर्श उधार देने की अपनी शक्तिशाली क्षमता का प्रदर्शन किया। और आने वाला दशक कंप्यूटरों को शक्ति और गौरव की नई ऊँचाई तक ले जाएगा जो इस स्तर पर कोई भी कल्पना नहीं कर सकता है "

विश्लेषण एवं व्याख्या

विश्वविद्यालय या अन्य शैक्षणिक पुस्तकालयों का स्वचालन गुणवत्ता सेवा प्रदान करने और जगह और समय के दौरान काटने वाले विभिन्न सूचना स्रोतों तक आसान पहुंच प्रदान करने में एक लंबा रास्ता तय कर चुका है। आईटी को अपनाने से न केवल विद्वानों के समय की बचत हुई है बल्कि इसने सूचना स्रोतों के पहुंच के आधार को भी विशाल किया है। रायपुर, विश्वविद्यालय में चयनित शैक्षणिक पुस्तकालयों में उपयोग किए जा रहे पुस्तकालय स्वचालन सॉफ्टवेयर पैकेजों को अध्ययन के लिए लिया गया है। डेटा स्वचालित शैक्षणिक पुस्तकालयों से एकत्र किए गए हैं और यह भी देखा गया है कि पुस्तकालय जो स्वचालित नहीं थे या जो व्यावसायिक रूप से उपलब्ध सॉफ्टवेयर का उपयोग नहीं करते हैं, वे अध्ययन में प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

चेकलिस्ट के आधार पर और लाइब्रेरियन और सूचना पेशेवरों को वितरित प्रश्नावली के अनुसार डेटा एकत्र किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण के लिए केवल दो सॉफ्टवेयर को ध्यान में रखा गया है। वे इस प्रकार हैं

[1] विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए सॉफ्टवेयर (ल्स)

[2] ई _ ग्रंथालय

अध्ययन पुस्तकालय सॉफ्टवेयर के मूल्यांकन के साथ सात शैक्षणिक पुस्तकालयों का पालन के रूप में उपयोग करता हैरू

तालिका संख्या 1 अध्ययन पुस्तकालय सॉफ्टवेयर के मूल्यांकन

क्रंमाक	विश्वविद्यालय का नाम	पता
1	पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय	रायपुर
2	इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय	रायपुर

अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपरोक्त मानदंड पर प्रश्नावली तैयार की गई है। डेटा विश्लेषण और प्रस्तुति लाइब्रेरियन से प्राप्त प्रतिक्रिया पर आधारित है। इसके अलावा, इस तुलनात्मक अध्ययन में संबंधित पुस्तकालय सॉफ्टवेयर पैकेज और व्यक्तिगत साक्षात्कार पर लिखे गए साहित्य का उपयोग किया गया है।

तालिका संख्या 2 अध्ययन के चयनित पुस्तकालयों का संग्रह विवरण

क्रंमाक	विश्वविद्यालय का नाम	पुस्तकें	संसाधन पत्रिका (शीर्षक)
1	पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय	3,13,000	500
2	इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय	67,000	245

स्वचालन की स्थिति

अधिग्रहण, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन कंट्रोल, सीरियल कंट्रोल और रिपोर्ट जनरेशन आदि जैसे संचालन को ध्यान में रखते हुए पूरे लाइब्रेरी हाउस के कम्प्यूटरीकरण को लाइब्रेरी ऑटोमेशन के रूप में जाना जाता है। सूचना विस्फोट के इस युग में स्वचालन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और पुस्तकालय स्वचालन में पुस्तकालय सॉफ्टवेयर बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि लाइब्रेरियन द्वारा इसके महत्व को जानते हुए भी, वे विभिन्न कारणों से अपने पुस्तकालय का कम्प्यूटरीकरण करने में सक्षम नहीं हैं। हालाँकि कुछ पुस्तकालयों ने या तो पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत या आंशिक रूप से कम्प्यूटरीकृत किया है। निम्नलिखित पुस्तकालयों ने अपने पुस्तकालयों को स्वचालित करने के लिए विभिन्न वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर पैकेजों का उपयोग किया है

तालिका संख्या 3स्वचालन की स्थिति

संस्था का नाम	स्वचालन का वर्ष	समाप्ति का वर्ष	पहले इस्तेमाल किया गया सॉफ्टवेयर	वर्तमान में उपयोग में है	संशोधन की संभावना	पूर्वव्यापी रूपांतरण	सॉफ्टवेयर के प्रकार
पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय	2002	2002	सीडीएस ६ आईएसआईएस	सोल 03	हाँ	हाँ	संपदा
इंदिरा गांधी कृ षि विश्वविद्यालय	2015	2015. 16	सीडीएस ६ आईएसआईएस	ई–ग्रन्थालय	हाँ	हाँ	संपदा

तालिका 3 विभिन्न शैक्षणिक पुस्तकालयों के स्वचालन की सामान्य स्थिति को दर्शाता है और इन पुस्तकालयों में स्वचालन 2000 के बाद से ही शुरू हो गया है। हालांकि, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में एक अग्रणी विश्वविद्यालय पुस्तकालय है, इसने ग्रंथ सूची डेटाबेस के लिए सीडीएस ६ आईएसआईएस का उपयोग करके कम्प्यूटरीकरण शुरू किया था और वर्तमान में 2002 में ैव्स्–03 एकीकृत सॉफ्टवेयर पैकेज स्थापित किया है। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय लाइब्रेरी ने 2015 में 16 को पूरी तरह से एकीकृत लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर ई–ग्रंथालय के साथ स्वचालन शुरू किया। 60ः से अधिक चयनित शैक्षणिक पुस्तकालयों ने क्रमशः ैव्स्.03, और म. ळतंदजींसंल का उपयोग करके स्वचालन अर्थात, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय को पूरा किया है। तालिका से पता चलता है कि सभी चयनित पुस्तकालयों को पहले कंप्यूटर संग्रह के माध्यम से अपने संग्रह और पहुंच जानकारी को संग्रहीत करने के लिए सीडीएस/ आईएसआईएस का उपयोग किया गया है। उपरोक्त सभी लाइब्रेरी ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर में ब्क्ै ६ प्ैप् डेटाबेस से नव स्थापित सॉफ्टवेयर पैकेज में पूर्वव्यापी रूपांतरण की सुविधाएं हैं।

तालिका संख्या 4सामान्य जानकारी

सॉफ्टवेयर का नाम	उत्पत्ति	अनुप्रयोग डोमेन			वितरक ६ डेवलपर का नाम	स्थानीय एजेंट का नाम
		बड़ा सिस्टम	मीडियम रेंज सिस्टम	लघु सिस्टम		

सोल 03	स्थानीय	उपलब्ध	......	....	प्छथ्स्प्ठछम्ज, न्ळछ६ भारत	.....
ई–ग्रन्थालय	स्थानीय	उपलब्ध	......	....	स्वचालन के लिए सरकारी पुस्तकालयों के लिए भारत सरकार की एनआईसी	....

उपरोक्त तालिका के अनुसार, अधिकांश सॉफ्टवेयर, ई–ग्रन्थालय स्थानीय रूप से विकसित पैकेज हैं। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय और इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय एजेंसियों या संगठनों द्वारा विकसित लाइब्रेरी ऑटोमेशन पैकेज का उपयोग कर रहे हैं। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्छथ्स्प्ठछम्ज, न्ळछ६ और भारत द्वारा विकसित `ल्स–03 का उपयोग करके अपने पुस्तकालय को स्वचालित करने के लिए। इंदिरा गांधी कृषि स्वचालन के लिए ई–ग्रंथालय सॉफ्टवेयर का उपयोग कर रहा है। हालांकि, ये सॉफ्टवेयर वर्तमान स्थिति में स्वचालन प्रक्रिया की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हैं, विश्वसनीयता और वैधता का परीक्षण किए बिना, यह एक बड़े विश्वविद्यालय पुस्तकालय में समस्या हो सकती है।

निष्कर्ष

इस शोध के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें की गई हैं। सिफारिशें सामान्य और विशेष रूप से विश्वविद्यालय और कॉलेज पुस्तकालयों के सभी पुस्तकालयों के लिए एक गाइड के रूप में सेवा करने के लिए की जाती हैं जो अपनी पुस्तकालय प्रक्रियाओं को स्वचालित करने का इरादा रखते हैं। सिफारिशें विश्वविद्यालय और कॉलेज प्रशासन, लाइब्रेरियन, अन्य लाइब्रेरियन और नीति निर्माताओं के लिए हैं। इसमे दो विश्वविद्यालय हैं। जिसमें रायपुर जिले के विश्वविद्यालय हैं। इन विश्वविद्यालयों के तहत देश भर में संबद्ध, घटक और निजी कॉलेजों की कुल संख्या लगभग 875 है। उनमें से केवल विश्वविद्यालय सहित 55 पुस्तकालयों जहां वे अपने पुस्तकालयों को स्वचालित कर रहे हैं। अन्य पुस्तकालय शामिल नहीं हैं क्योंकि उन्होंने अपने पुस्तकालय में स्वचालन के लिए किसी भी पुस्तकालय सॉफ्टवेयर का उपयोग नहीं किया है। 55 में से 20 शैक्षणिक पुस्तकालय (54:) के अधिकांश मुफ्त सॉफ्टवेयर सीडीएस ६ आईएसआईएस का उपयोग कर रहे हैं। केवल 12 (35:) पुस्तकालयों ने अन्य व्यावसायिक सॉफ्टवेयर का उपयोग किया है और 8 (20:) ने इन–हाउस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया है जो छात्रों द्वारा उनके पुस्तकालय के स्वचालन के लिए उनके प्रोजेक्ट वर्क के रूप में बनाया गया है। यह भी पाया गया कि 18 में से केवल 9 सार्वजनिक शैक्षणिक संस्थानों ने सीडीएस ६ आईएसआईएस का इस्तेमाल किया है और 23 में से 16 निजी शैक्षणिक संस्थानों ने सीडीएस ६ आईएसआईएस और इन–हाउस सॉफ्टवेयर का उपयोग किया है। यह स्पष्ट है कि सार्वजनिक संस्थानों के लाइब्रेरियन निजी संस्थानों के लाइब्रेरियन के बजाय पुस्तकालय स्वचालन के बारे में अधिक जागरूक और जागरूक हैं। हालाँकि, सार्वजनिक या निजी, अधिकांश शैक्षणिक संस्थान अभी भी सीडीएस ६

आईएसआईएस का उपयोग कर रहे हैं।

[1] संदर्भ ग्रंथ सूची

[2] एडेनिरन, ओलाटंडे आर (जनवरी 1999) दक्षिणी अफ्रीका में लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर उपयोग मेंरू खोज इंजन, डेटाबेस फाइन–ट्यूनिंग और रखरखाव उपकरण का एक तुलनात्मक विश्लेषण इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी, टवस.17 (1)।

[3] अहमद, दाऊद (1993) कॉमन लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर पैकेज भारत में उपलब्ध हैरू एक तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रलेखन केंद्र, नई दिल्ली में प्रस्तुत किया गया।

[4] हवादार, चेत बहादुर (1999) सॉफ्टवेयर सीडीएस ध आईएसआईएस का उपयोग करके 1995–1998 के स्वास्थ्य साहित्य के संदर्भ में ग्रंथ सूची तैयार करना, अप्रकाशित परियोजना रिपोर्ट केंद्रीय पुस्तकालय और सूचना विज्ञान, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल में प्रस्तुत की गई।

[5] अमात्य, पीपी (जुलाई 2005) नेपाल में सार्वजनिक पुस्तकालय विकास और कुछ समस्याओं का समाधान किया जाना है। ज्न्सै।।, अवस.3 (1) पीपी.32–36।

[6] आर्यल, रुद्र प्रसाद (जुलाई 2005)काठमांडू विश्वविद्यालय में पुस्तकालय स्वचालन, ज्न्सै।।, अवस.4, (1)।

[7] भारद्वाज, राजेश क्र0 और शुक्ला, आर.के. (2000) लाइब्रेरी ऑटोमेशन के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण, लाइब्रेरी प्रोग्रेस (इंटरनेशनल), अवस.20 (1) च.1–9

[8] (ऑनलाइन संसाधन 06ध05,2007 को एक्सेस किया गया)।

[9] बॉस, रिचर्ड डब्ल्यू (1990)। लाइब्रेरी मैनेजर की ऑटोमेशन के लिए गाइड, तीसरा संस्करण, बोस्टनरू जीके हॉल।

[10] कंप्यूटर एसोसिएशन ऑफ नेपाल (2005) राष्ट्रीय आईटी कार्यबल सर्वेक्षण रिपोर्ट।

[11] देहिगम, कंचना (2006) लाइब्रेरी मैनेजमेंट पैकेज का एक तुलनात्मक अध्ययन श्रीलंका के अकादमिक पुस्तकालयों में उपयोग किया जाता है।

[12] अप्रकाशित शोध प्रबंध, राष्ट्रीय विज्ञान संचार और सूचना संसाधन संस्थान, नई दिल्ली के अधीन।

[13] गोह, डायोन हो–लियान (2006) ओपन सोर्स डिजिटल लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर ऑनलाइन सूचना की समीक्षा के मूल्यांकन के लिए एक चेकलिस्ट, खंड 30 (4), पीपी 360–379। (ऑनलाइन संसाधन 06 05, 2007 को एक्सेस किया गया)।

[14] हचिंग्स, एफ.जी.बी. (1969) लाइब्रेरियनशिपय एक छोटा मैनुअल, ऑक्सफोर्डरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[15] महमूद, खालिद एम (1998) विकासशील देशों और पाकिस्तान में विपणन के लिए (लाइब्रेरी ऑटोमेशन एंड मैनेजमेंट प्रोग्राम) सॉफ्टवेयर का विकास, प्रोग्राम, खंड .3 (1)। (ऑनलाइन संसाधन 06 05, 2007 को एक्सेस किया गया)।

[16] मलिक, खालिद महमूद (1994) पाकिस्तान में लाइब्रेरी ऑटोमेशन की स्थिति। लाइब्रेरी रिव्यू, वॉल्यूम, 45 (ऑनलाइन संसाधन 21. 05. 2007 को एक्सेस किया गया)।